हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–1 : सत्र 1

हिंदी कविता

हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–2 : सत्र 2

हिंदी गद्य साहित्य

(शैक्षिक वर्ष 2019-20 से)

बी. ए. भाग 1 (हिंदी)

इकाई 1 (क)

1. भिक्षुक

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

1.3.1 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय :

हिंदी साहित्य-जगत् के श्रेष्ठतम साहित्यकार के रूप में निराला जी का नाम आदर से लिया जाता है। महाकवि निराला जी का पूरा नाम सूर्यकांत रामसहाय त्रिपाठी है। लेकिन हिंदी साहित्य जगत आपको 'निराला' नाम से जानता है। निराला जी हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख चार आधारस्तंभों में से एक हैं। उन्हें प्रगतिशील, दार्शनिक, चिंतनशील, विद्रोही एवं जन-जीवन के प्रति विशेष आस्था रखने वाले कवि के रूप में जाना जाता है। उन्हें 'महाप्राण निराला' भी कहा जाता है। अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त अन्याय एवं शोषण के खिलाफ उन्होंने आवाज उठाई हैं। किसान, मजदूर, श्रमिक, दलित, नारी तथा पिछडे वर्गों को अपने साहित्य-जगत् का विषय बनाने का चुनौतिपूर्ण कार्य निराला जी ने किया। भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम, मानव प्रेम एवं प्रकृति प्रेम आपके काव्य के मूल विषय रहे हैं। उनके समूचे साहित्य में मानवतावाद के दर्शन होते हैं। भाषा और छंद के बंधन तोडकर उन्होंने मौलिक और नवीन काव्य-रचना की। उन्होंने हिंदी में गीतिकाव्य का प्रचलन किया। हिंदी में वे मुक्त छंद के प्रणेता माने जाते हैं।

निराला का जन्म 21 फरवरी, 1896 ई. को बंगाल के मेदिनीपुर परिक्षेत्र के महिषादल नामक स्थान में हुआ। उनका परिवार कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार था। बचपन में ही उनकी माँ का देहावसान हो गया था। इसलिए पिता ने उनका पालन-पोषण किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बंगाली में हुई और वहाँ से ही मैट्रीक तक की शिक्षा उन्होंने प्राप्त की। कविता के प्रति बचपन से ही उनका अनुराग था पत्नी मनोहरादेवी की प्रेरणा से वे हिंदी की ओर आकृष्ट हुए। प्रतिभाशाली होने के कारण शीघ्र ही वे हिंदी और संस्कृत के अधिकारी विद्वान हो गए। आपका सारा जीवन दुःखों, असफलताओं, संकटों और संघर्षों से भरा हुआ रहा है। बचपन में माँ की मृत्यु, यौवनावस्था में पदार्पण करते समय पिता की मृत्यु, एक पुत्र और पुत्री को जन्म देकर अल्पावधि में ही पत्नी मनोहरादेवी एवं तदनंतर बेटी सरोज के असामायिक देहावसान होने के कारण उनका सांसारिक जीवन बेहद कष्टप्रद रहा। कवि होने के साथ-साथ वे एक कुशल गायक एवं संगीतज्ञ भी थे। उनके साहित्यिक जीवन की साधना 'समन्वय' नामक के संपादक काल से प्रारंभ हुई। रामकृष्ण मिशन के संपर्क में आने के कारण निराला जी की विचार-धारा पर रामकृष्ण, विवेकानंद का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। आर्थिक कठिनाईयों से जूझनेवाले इस कवि को महिषादल राज्य में नौकरी मिली, परंतु स्वतंत्र स्वभाव के कारण उन्होंने नौकरी छोडी। आप जीवनभर साहित्य-सेवा से जुडे रहे। 'निराला' सब प्रकार के बंधनों से मुक्त एक स्वच्छंद प्रकृति के कलाकार थे। 15 नवम्बर, 1961 ई. को निराला जी का स्वर्गवास हो गया।

प्रमुख रचनाएँ :

निराला जी बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

काव्य-संग्रह	-	तुलसीदास (प्रबंध), अनामिका, परिमल, गीतिका, अर्चना, आराधना, गीत कुंज, बेला, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते, अणिमा, विनय खंड, कविश्री, सांध्य काकली, सरोजस्मृति आदि।
उपन्यास	-	अलका, अपरा, चमेली, चोटी की पकड, निरूपमा, प्रभावती, उच्छृंखल, काले कारनामे आदि।
कहानी-संग्रह	-	लिली, सुकुल की बीबी, देवी, सखी आदि।
नाटक	-	समाज, शकुंतला, उषा, राजयोग।
रेखाचित्र	-	कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, चतुरी चमार।
जीवनी	-	भीष्म, प्रह्लाद, राणा प्रताप, ध्रुव, शकुंतला।
निबंध	-	प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, प्रबंध परिचय, रवींद्र कानन कुसुम, चाबुक आदि।
अनुवाद	-	महाभारत, देवी चौधुरानी, आनंदमठ, रजनी, दुर्गेशनंदिनी, कृष्णकांत का विल, परिव्राजक स्वामी रामकृष्ण, श्रीरामकृष्ण वचनामृत, विवेकानंद के भाषण आदि।
आलोचना	-	पंत और पल्लव, प्रबंध प्रतिमा।
संपादन	-	'समन्वय' और 'मतवाला' नामक पत्रिकाओं का संपादन।

1.3.2 'भिक्षुक' कविता का परिचय :

कवि निराला जी की 'भिक्षुक' यह कविता उनके चर्चित काव्य-संग्रह 'परिमल' में संग्रहित है। समाज के पीडितों, दु:खी, दीन-दलितों के प्रति निराला जी का हृदय विशेष संवेदनशील था। उसकी ही झलक प्रस्तुत कविता में भी स्पष्टत: दिखाई देती है। इस कविता में कवि ने एक भिखारी और उसके दो बच्चों की दयनीय अवस्था का वर्णन किया है और उनके प्रति सहानुभूति प्रकट की है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने भिक्षुक का यथार्थ वर्णन किया है। कविता में भिखारी मजबूरन भीख माँगने के लिए विवश है। शारीरिक दुर्बलता एवं दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण वह अपना एवं अपने परिवार का पेट भरने में अक्षम है। इसलिए वह अपनी फटी हुई पुरानी झोली समाज-सम्मुख बार-बार फैलाकर दया की याचना करता रहता है। इस भिखारी से भी बदतर जिंदगी जीने के लिए प्रवृत्त हैं उसके बच्चे, जो अपने दोनों हाथों से भूख एवं भिक्षा की याचना को समाज के सामने बार-बार जाहीर कर रहे हैं। लेकिन बेदर्द एवं जालीम समाज से जब कुछ भी नहीं हासिल होता और भाग्य-विधाता से भी वे जब कुछ नहीं पाते तो वे सिर्फ आँसुओं के घूँट पीने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

रास्ते पर पडे जूठे पत्तलों को लेकर भी उन्हें कुत्तों से संघर्ष करना पडता है यानी कवि यहाँ दर्शाना चाहते हैं कि उनका जीवन पशुओं से भी बदतर और गया गुजरा है। कवि के संवेदनशील हृदय में उनके प्रति हमदर्दी है। उनके

दु:ख-दर्द एवं पीडा को अपने अंदर समाने की बात कवि कहते हैं, लेकिन उन्हें भी इसके लिए संघर्षरत रहने की नसिहत कवि देते हैं। भिक्षुक के प्रति अपार सहानुभूति को कवि ने इस कविता के माध्यम से प्रकट किया है।

1.3.3 'भिक्षुक' कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता में कवि दीन-हीन भिक्षुक को रस्ते पर आता देखते हैं, जिसकी अवस्था बेहद ही दर्दनाक एवं दयनीय है। संवेदनशील हृदय के कवि उसकी निर्मम व्यथा को चित्रित करते हुए कहते हैं - भिक्षा की याचना करते हुए उस भिखारी के कलेजे के टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं, उसका कलेजा भीख माँगते-माँगते चूर-चूर हो रहा है। वह अपनी इस अवस्था के लिए पछता रहा है, पर भीख माँगने के लिए वह विवश है। उसकी स्थिति इतनी कृश एवं दुर्बल है कि उसका पेट और पीठ दोनों एक ही दिखाई दे रहे हैं। वह लाठी लेकर चल रहा है, जो उसकी शारीरिक दुर्बलता एवं वृद्धावस्था को भी दर्शाता है। वह अपने पेट की भूख मिटाने के लिए सिर्फ मुट्ठी भर दाने की ही याचना करते हुए अपनी फटी हुई पुरानी झोली को बार-बार फैला रहा है। यह उसकी विवशता बनी हुई है, लेकिन ऐसे करते हुए उसके कलेजे के टुकड़े -टुकड़े हो जाते हैं। वह पछताता है, लेकिन फिर भी रस्ते पर भीख माँगने के लिए प्रवृत्त हो जाता है।

उस भिखारी की दयनीयता और अधिक इसलिए भी है कि उसके साथ दो बच्चे भी हैं, जो सदैव अपने हाथ फैलाए हुए हैं। बाएँ हाथ से वे अपने पेट पर हाथ फेरते रहते हैं, मानों अपनी भूख का इजहार कर रहे हो और दायाँ हाथ आगे की ओर फैला रहता है, इस आशा में कि किसी की दया का पात्र वे बन जाएँ और कोई उन्हें कुछ खाने के लिए दे दें। किसी की भी दया-दृष्टि जब उन पर नहीं पड़ती तो उनके ओंठ भूख के कारण सूख जाते हैं और भाग्य-विधाता-दाता से वे कुछ भी नहीं पाते, तो वे आँसुओं के घूँट पीकर रह जाते हैं। याने भूख मिटाने के लिए जब ये भिखारी रास्ते पर भीख की याचना करते हैं और कोई भी जब इन पर दया नहीं दिखाता तब भूख के कारण इनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं और भाग्य-विधाता भगवान से भी जब कुछ हासिल नहीं होता, तब दर्द और निराशा ही उनके हाथ लगती है।

इन भिखारियों की नजर कभी सड़क पर पड़ी हुई जूठी पत्तलों पर पड़ती है, तो भूख के कारण वे उन्हें ही चाटने लगते हैं, किंतु यहाँ भी उनके प्रतिस्पर्धी के रूप में कुत्ते मौजूद होते हैं, जिन्हें लगता है कि उनकी भूख का हिस्सा इन भिखारियों के द्वारा खाया जा रह है, इसलिए वे भी उनके हाथों से उन जूठी पत्तलों को हासिल करने के लिए अड़े हुए हैं। जीवन की कैसी विडम्बना है कि जो पशुओं के लिए भोग्य वस्तु है, वह भी उनके नसीब में नहीं है या उसके लिए भी उन्हें संघर्ष करना पड़ रहा है। परंतु कवि का हृदय संवेदनशील है, मानवीयता से ओत-प्रोत है। उन भिखारियों की स्थिति को देखकर उन्हें उनका हृदय कहता है कि मेरे हृदय में संवेदना का अमृत बह रहा है, मैं उस अमृत से तुम्हें सींचकर तृप्त कर दूँगा। लेकिन तुम्हें चक्रव्यूह भेदने गए अभिमन्यु जैसे जुझारू और संघर्षशील होना होगा, तभी इस संसार के गरीबी और अन्य दुश्चक्ररूपी चक्रव्यूह से तुम मुक्त हो सकोगे। तुम्हारे संपूर्ण दु:ख-दर्द को मैं अपने हृदय में समेट लूँगा, तुम्हारे सारे दु:ख-दर्द को बाँटकर उन्हें दूर करूँगा। अत: कवि भिक्षुक की दीनता के प्रति अपनी अपार संवेदनशील सहानुभूति को प्रकट करते हैं। समाज के शोषण, अन्याय एवं दमन के खिलाफ ऐसे शोषित, पीड़ित एवं दलित वर्ग के प्रति कवि की आस्था एवं संवेदनशीलता को प्रस्तुत कविता बयान करती है।

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'भिक्षुक' कविता के कवि ..... जी है।

1) अज्ञेय 2) कुँवर नारायण 3) निराला 4) नागार्जुन

2) 'भिक्षुक' कविता ..... काव्य-संग्रह में संग्रहित है।

1) अनामिका 2) परिमल 3) गीतिका 4) बेला

3) 'भिक्षुक' कविता में भिक्षुक के साथ ..... बच्चे भी हैं, जो सदैव अपने हाथ फैलाए हुए हैं।

1) दो 2) तीन 3) चार 4) पाँच

4) भिखारियों की नजर कभी सड़क पर पड़ी हुई ..... पर पड़ती है, तो भूख के कारण वे उन्हें ही चाटने लगते हैं।

1) जूठे बर्तनों 2) प्लेट्स 3) कागजों 4) जूठी पत्तलों

5) रास्ते पर पड़ी जूठी पत्तलों को भिखारियों से हासिल करने के लिए ..... अड़े हुए है।

1) बंदर 2) लोग 3) कुत्ते 4) सूअर

6) 'भिक्षुक' कविता में कवि भिखारी को ..... जैसा होने को कहते हैं।

1) अर्जुन 2) राम 3) कृष्ण 4) अभिमन्यु

7) कवि निराला जी ..... की दीनता के प्रति अपनी अपार संवेदनशील सहानुभूति को प्रकट करते हैं।

1) अपाहिज 2) किसान 3) मजदूर 4) भिक्षुक

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ :

1) कलेजा - हृदय

2) कलेजे के दो टूक करना - हृदय अतीव दु:ख से भारी हो जाना

3) लकुटिया - लकड़ी

4) अभिमन्यु - महाभारत का एक पात्र। अर्जुन का पुत्र, जो चक्रव्यूह को भेदने जाता है और पाँच महाबलि कौरवों के द्वारा मारा जाता है।

1.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) निराला

2) परिमल

3) दो

4) जूठी पत्तलों

5) कुत्तें

6) अभिमन्यु

7) भिक्षुक

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) कवि निराला जी ने भिखारी का चित्रण किस प्रकार से किया है।
2) 'भिक्षुक' कविता के भिखारी के बच्चों की दीनता पर प्रकाश ड़ालिए।
3) कवि निराला जी किस प्रकार से भिखारियों के दुःख-दर्द को अपने हृदय में समेटते हुए उनके प्रति संवेदनशील सहानुभूति प्रकट की है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'भिक्षुक' कविता में निराला जी ने भिक्षुक की दीन-हीन दशा का वर्णन किस प्रकार से किया है?
2) 'भिक्षुक' कविता में कवि ने समाज के शोषित, पीड़ित, उपेक्षित वर्ग के प्रति आस्था एवं संवेदनशील अनुभूति को प्रकट किया हैं, स्पष्ट कीजिए।
3) निराला जी ने अपनी 'भिक्षुक' कविता के माध्यम से समाज में व्याप्त भिखारियों की समस्या को उजागर करते हुए क्या बलताना चाहा है? अपने शब्दों में बयान कीजिए।
4) 'भिक्षुक' कविता के उद्देश्य-पक्ष को विशद कीजिए।

इकाई 1 (ख)

2. बालिका का परिचय

- सुभद्राकुमारी चौहान

2.3.1 सुभद्राकुमारी चौहान का परिचय :

सुभद्राकुमारी चौहान जी हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका हैं। उनका जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव में रामनाथसिंह के परिवार में 16 अगस्त, 1904 ई. को हुआ। उनके पिता ठाकुर रामनाथसिंह शिक्षा प्रेमी थे और उन्हीं की देख-रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। इनकी प्रारंभिक शिक्षा कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज, प्रयाग में हुई। बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचने लगी थी। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की

भावना से परिपूर्ण हैं। सन 1919 में खंडवा के ठाकूर लक्ष्मणसिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थीं। सन 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थीं। स्वाधीनता की लड़ाई में अपने पति का साथ देते हुए वे दो बार जेल भी गई थीं। पति की साहित्य के प्रति गहरी निष्ठा थी, अत: सुभद्रा जी की काव्ययात्रा को प्रोत्साहन ही मिला। माखनलाल चतुर्वेदी जी के संपर्क में आने के बाद आपकी काव्यधारा में राष्ट्रीयता की भावना निखर आई। साहित्यसेवा और देशसेवा ही आपके जीवन का उद्देश्य बन गया। आपका जीवन अत्यंत सीधा, सरल तथा सादगीपूर्ण रहा। आप मध्यप्रदेश विधानसभा की सदस्या भी रहीं दुर्भाग्यवश 15 फरवरी, 1948 ई. को एक मोटर दुर्घटना में आपकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख रचनाएँ :

कविता संग्रह - 'मुकुल', 'नक्षत्र' और 'त्रिधारा'।

कहानी संग्रह - 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी' और 'सीधे सादे चित्र'।

सम्मान :

भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल, 2006 ई. को सुभद्राकुमारी चौहान जी की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए नए नियुक्त एक तटरक्षक जहाज को सुभद्राकुमारी चौहान जी का नाम दिया। भारतीय ड़ाकघर विभाग ने 6 अगस्त, 1976 ई. को सुभद्राकुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक ड़ाक-टिकट जारी किया है।

2.3.2 'बालिका का परिचय' कविता का परिचय :

सुभद्रा जी ने अपनी काव्य-साधना में एक ओर तो देशप्रेम से ओत-प्रोत क्षत्राणियों की वीरता का वर्णन किया है तो दूसरी ओर नारी के कोमलतम, संवेदनशील, उदात्त एवं भावुक पक्षों का भी उद्घाटन किया है। बेटी के अद्भुत, कोमलतम एवं सौंदर्यात्मक पक्ष को लेकर सुभद्रा जी ने उसके गुण एवं विशेषताओं की चर्चा प्रस्तुत कविता में की है। बालिका के कितने ही सारे गुण एवं उसकी महत्ता पर प्रस्तुत काव्य के माध्यम से प्रकाश ड़ाला गया है। जैसे कि किसी के प्राण किसी में बसे होते हैं उसी तरह से कवयित्री के प्राण उनकी बेटी में बसे हुए हैं, बेटी में ही उन्हें अपना सबकुछ दिखाई देता है, बेटी ही उनके लिए ईश्वर है।

अपनी जिंदगी में बेटी के मायने बताती हुई कवयित्री कहती हैं कि बेटी ही उनकी गोदी की शोभा है, सुहाग की लाली है, भिखारिन को मिली शाही शान है, दीपक की ज्योति हैं, काले बादालों के बीच उजाला है, कमल में कैद भँवरे के मुक्ति का आनंद, पतझड़ के बाद की हरियाली का आनंद है। बेटी के इर्द-गिर्द ही उनका सारा की सारा आल्हाद बिखरा हुआ है। तपस्वी की 1 तपस्या, अंधे की 2 दृष्टि, ज्ञानी की ज्ञानधारणा को तथा अपने बचपन को वे अपनी बेटी में महसूस करती हैं। सुभद्रा जी के लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और काशी हैं। सुभद्रा जी बेटी को पाकर बालक कृष्ण की लीला तथा राम के प्रति कौशल्या माता के ममता भाव को अपने मन में देखती है। सुभद्रा जी बालिका में ईसा के क्षमा भाव, मुहम्मद के विश्वास, जिनवर और गौतम के दयाभाव को देखती हैं। वे बालिका के इन सारे गुणों के वर्णन के बावजूद कहती हैं कि बालिका का परिचय वही जान सकता है, जिसके पास

माँ का दिल है। बालिका के बेहतरीन मोहक, आल्हादक रूप को तथा उसके गुणों को बेहद सजीवता के साथ इस कविता में कवयित्री ने चित्रित किया है और बालिका के अहमियत पर प्रकाश ड़ाला है।

2.3.3 'बालिका का परिचय' कविता का भावार्थ :

'बालिका का परिचय' कविता में कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका के गुणों का सजीव चित्रण किया है। कवयित्री के अनुसार बेटी ही उनकी गोदी की शोभा है, सुख और सुहाग की लालिमा है, भिखारिन को मिली शाही शान है तथा मतवाली मनोकामना है। कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही अंधरे में दीपक की ज्योति के समान है, काले बादलों के बीच उजाले के समान हैं। सुभद्रा जी के लिए उनकी बटी कमल में कैद भँवरे को सुबह मुक्ति का जो आनंद मिलता हैं, उसके समान है। पतझड़ के बाद आनेवाली हरियाली के आनंद की अनुभूति है।

कवयित्री के सूने जीवन में उनकी बेटी अमृत बनकर उन्हें नवजीवन प्रदान करती है। जैसे तपस्वी अपनी तपस्या में मग्न रहता है, ठीक उसी तरह कवयित्री भी अपनी बेटी के सानिध्य में मग्न रहती हैं। अंधे को दृष्टि पाने के बाद जो आनंद मिलता है और सच्ची लगन से अपने मन को वश में करके ज्ञान प्राप्त करने वाले ज्ञानी को जो खुशी मिलती है, वही खुशी कवयित्री अपनी बेटी के साथ महसूस करती है। बालिका कवयित्री के बीते हुए बचपन को याद दिलाने वाली, खेलकूद का एहसास कराने वाली वाटिका है। बालिका कवयित्री की ही तरह मचलती, किलकती तथा हँसती हुई उनके बचपन की यादों को नाटिका के रूप में प्रस्तुत करती है।

कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और काशी है, अर्थात लोगों को इन स्थानों में जाकर जिस आनंद और शांति की अनुभूति होती है, वही अनुभूति उन्हें अपनी बेटी के साथ रहकर मिलती है। बेटी ही कवयित्री की ध्यान-धारणा और जप-तप बन गई है। बेटी में ही उन्हें घट-घट-वासी (ईश्वर) के दर्शन होते हैं। हर पल हर जगह कवयित्री को अपनी बेटी का ही खयाल रहता है। अपनी बेटी को पाकर कवयित्री बालक कृष्ण की लीला अपने आँगन में तथा बालक राम के प्रति कौशल्या माता की ममता का भाव अपने मन में देखती हैं।

कवयित्री अपनी बेटी में ही प्रभु ईसा का क्षमा भाव, नबी मुहम्मद का विश्वास, जिनवर और गौतम बुद्ध द्वारा सभी प्राणियों पर किया गया दया भाव देखती हैं। बालिका के इतने गुणों का सजीव चित्रण करने पर भी कवयित्री का कहना है कि बालिका का परिचय सिर्फ वही जान सकता है, जिसके पास माँ का दिल है।

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'बालिका का परिचय' यह कविता ..... जी की है।

1) रघुवीर सहाय 2) कीर्ति चौधरी 3) सुभद्राकुमारी चौहान 4) अनामिका

2) सुभद्रा जी के अनुसार बेटी ही उनकी गोदी की ..... है।

1) शान 2) सुषमा 3) पहचान 4) शोभा

3) कवयित्री के लिए बेटी ..... में कैद भँवरे को सुबह मुक्ति का जो आनंद मिलता है उसके समान है।

1) पत्तों 2) घर 3) कमल 4) फुलों

4) जैसे ..... अपनी तपस्या में मग्न रहता है, ठीक उसी तरह कवयित्री भी अपनी बेटी के सानिध्य में मग्न रहती हैं।

1) इंसान 2) महामानव 3) महान व्यक्ति 4) तपस्वी

5) सुभद्रा जी अपने बचपन को ..... में महसूस करती हैं।

1) सपनों 2) खयालों 3) किताबों 4) बालिका

6) कवयित्री के लिए उनकी बेटी ही मंदिर, मस्जिद, काबा और ..... है।

1) अयोध्या 2) काशी 3) कर्बला 4) गिरजाघर

7) बेटी को पाकर कवयित्री बालक ..... के प्रति कौशल्या माता की ममता का भाव अपने म में देखती हैं।

1) अर्जुन 2) कृष्ण 3) राम 4) हनुमान

8) कवयित्री अपनी बेटी में ही जिनवर और गौतम बुद्ध के ..... भाव को देखती है।

1) जीव दया 2) महान 3) सुंदर 4) विशाल

9) सुभद्रा जी के अनुसार बालिका का परिचय सिर्फ वही जान सकता है, जिसके पास ..... का दिल है।

1) इंसान 2) भगवान 3) माँ 4) ज्ञानी

2.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) सुभद्राकुमारी चौहान 2) शोभा 3) कमल

4) तपस्वी 5) बालिका 6) काशी

7) राम 8) जीवदया 9) माँ

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका का परिचय किस तरह दिया है?

2) सुभद्रा जी को बालिका में कौन-से गुण दिखाई देते हैं?

3) बालिका कवयित्री के जीवन में किस प्रकार महत्त्व रखती है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'बालिका का परिचय' कविता में सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका का चित्रण किस प्रकार से किया है?

2) 'बालिका का परिचय' इस कविता के द्वारा सुभद्राकुमारी चौहान जी ने बालिका की महत्ता को किस प्रकार से विशद किया है?

इकाई 1 (ग)

3. तेरी खोपड़ी के अंदर

- नागार्जुन

3.3.1 वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' का परिचय :

हिंदी साहित्य के अद्वितीय साहित्यकार के रूप में नागार्जुन जी को जाना जाता है। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र है। प्यार से उन्हें लोग 'बाबा नागार्जुन' भी कहते हैं। उनका जन्म बिहार राज्य के दरभंगा प्रमंडल के अंतर्गत मधुबनी जिले के सतलखा नामक गाँव में 30 जून, 1911 ई. में संस्कारशील ब्राह्मण परिवार में हुआ। हिंदी साहित्य में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ की। हिंदी और संस्कृत के अलावा पाली में भी उन्होंने कविताएँ लिखी हैं। उनके चार वर्ष की आयु में ही माता के गुजर जाने के बाद उनका पालन-पोषण उनके पिताजी ने किया। नागार्जुन का व्यक्तित्त्व निर्भिक था, वे स्वतंत्र-वृत्ति के तथा संघर्षशील थे। घुमक्कड़ प्रकृति के व्यक्ति होने के कारण वे एक स्थान पर टिक नहीं पाए। काशी और कलकत्ता में उन्होंने संस्कृत का अध्यापन कार्य किया। श्रीलंका में बौद्ध भिक्षु के रूप में यात्रा की। उनकी कविता का ध्येय लोकहित रहा है। इसीलिए उन्होंने सीधी-सादी लोकभाषा को ही अपनाया है। जनसाधारण के प्रति उनके हृदय में आस्था थी। समाज में व्याप्त शोषण, सामाजिक रीतियों एवं धार्मिक रूढ़ियों के प्रति उन्होंने मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाया है, लेकिन मार्क्सवाद का प्रचार-प्रसार नहीं किया। सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, विसंगतियों तथा पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ उन्होंने विद्रोह किया है।

जनता की अदम्य शक्ति पर विश्वास रखने वाले नागार्जुन जी छायावादोत्तर प्रगतिशील हिंदी कविता के प्रथम पंक्ति के जनकवि है। आपका दु:ख समूची पीड़ित मानवता का दु:ख है। उनके काव्य की मुख्य विशेषता और प्रखर सामाजिक दृष्टिकोण तथा जीवंत यथार्थबोध। व्यंग्य उनकी कविता का प्रधान हथियार रहा है। आधुनिक व्यवस्था के खोखलेपन को उन्होंने व्यंग्य के जरिए प्रस्तुत किया हैं। उनके 'पत्रहीन नग्न गाछ' इस मैथिली काव्य-संग्रह को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। नागार्जुन जी को 'आधुनिक कबीर' भी कहा जाता है। अपनी कलम से हिंदी साहित्य को समृद्ध करने वाले नागार्जुन जी का 5 नवम्बर, 1998 को ख्वाजा सराय, दरभंगा, बिहार में देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ :

कविता-संग्रह - युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, भस्मांकुर, हजार हजार बाँहोंवाली, तालाब की मछलियाँ, खून और शोले, प्रेत का बयान, तुमने कहा था, भूमिजा, चना ओर गरम, शपथ, खिचड़ी, विप्लव देखा हमने, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्न-गर्भ. आखिर ऐसा क्या कह दिया हमने. इस गब्बारे की छाया में आदि।

उपन्यास - रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरूण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ, दुःख-मोचन, नई पौध, कुंभीपाक, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, हीरक जयंती आदि।

मैथिली रचनाएँ - चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (काव्य), नव तुरिया, पारि (उपन्यास)।

संस्कृत में लिखित कविताएँ - देश दशकम्, कृषक दशकम्, श्रमिक दशकम्।

अनुवाद - मेघदूत, गीत-गोविंद, विद्यापति के गीत।

आलोचना - 'एक व्यक्ति का युग' शीर्ष से निराला का मूल्यांकन।

संपादन - दीपक (अबोहर-पंजाब), विश्वबंधु (लाहौर), कौमी बोली (हैद्राबाद-सिंध)।

अंतर्गत मधुबनी जिले के सतलखा नामक गाँव में 30 जून, 1911 ई. में संस्कारशील ब्राह्मण परिवार में हुआ। हिंदी साहित्य में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ की। हिंदी और संस्कृत के अलावा पाली में भी उन्होंने कविताएँ लिखी हैं। उनके चार वर्ष की आयु में ही माता के गुजर जाने के बाद उनका पालन-पोषण उनके पिताजी ने किया। नागार्जुन का व्यक्तित्त्व निर्भिक था, वे स्वतंत्र-वृत्ति के तथा संघर्षशील थे। घुमक्कड़ प्रकृति के व्यक्ति होने के कारण वे एक स्थान पर टिक नहीं पाए। काशी और कलकत्ता में उन्होंने संस्कृत का अध्यापन कार्य किया। श्रीलंका में बौद्ध भिक्षु के रूप में यात्रा की। उनकी कविता का ध्येय लोकहित रहा है। इसीलिए उन्होंने सीधी-सादी लोकभाषा को ही अपनाया है। जनसाधारण के प्रति उनके हृदय में आस्था थी। समाज में व्याप्त शोषण, सामाजिक रीतियों एवं धार्मिक रूढ़ियों के प्रति उन्होंने मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाया है, लेकिन मार्क्सवाद का प्रचार-प्रसार नहीं किया। सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, विसंगतियों तथा पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ उन्होंने विद्रोह किया है।

जनता की अदम्य शक्ति पर विश्वास रखने वाले नागार्जुन जी छायावादोत्तर प्रगतिशील हिंदी कविता के प्रथम पंक्ति के जनकवि है। आपका दुःख समूची पीड़ित मानवता का दुःख है। उनके काव्य की मुख्य विशेषता और प्रखर सामाजिक दृष्टिकोण तथा जीवंत यथार्थबोध। व्यंग्य उनकी कविता का प्रधान हथियार रहा है। आधुनिक व्यवस्था के खोखलेपन को उन्होंने व्यंग्य के जरिए प्रस्तुत किया हैं। उनके 'पत्रहीन नग्न गाछ' इस मैथिली काव्य-संग्रह को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। नागार्जुन जी को 'आधुनिक कबीर' भी कहा जाता है। अपनी कलम से हिंदी साहित्य को समृद्ध करने वाले नागार्जुन जी का 5 नवम्बर, 1998 को ख्वाजा सराय, दरभंगा, बिहार में देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ :

कविता-संग्रह - युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, भस्मांकुर, हजार हजार बाँहोंवाली, तालाब की मछलियाँ, खून और शोले, प्रेत का बयान, तुमने कहा था, भूमिजा, चना ओर गरम, शपथ, खिचड़ी, विप्लव देखा हमने, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्न-गर्भ, आखिर ऐसा क्या कह दिया हमने, इस गुब्बारे की छाया में आदि।

उपन्यास	-	रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरूण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ, दु:ख-मोचन, नई पौध, कुंभीपाक, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, हीरक जयंती आदि।
मैथिली रचनाएँ	-	चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (काव्य), नव तुरिया, पारि (उपन्यास)।
संस्कृत में लिखित कविताएँ	-	देश दशकम्, कृषक दशकम्, श्रमिक दशकम्।
अनुवाद	-	मेघदूत, गीत-गोविंद, विद्यापति के गीत।
आलोचना	-	'एक व्यक्ति का युग' शीर्ष से निराला का मूल्यांकन।
संपादन	-	दीपक (अबोहर-पंजाब), विश्वबंधु (लाहौर), कौमी बोली (हैद्राबाद-सिंध)।

3.3.2 तेरी खोपडी के अंदर कविता का परिचय :

प्रगतिवादी जनकवि नागार्जुन जी ने अपनी कविताओं में सामान्य जन को केंद्रित कर उनकी समस्याओं को, विवशताओं को, उसकी पीड़ा को, उसपर होते अन्याय-अत्याचार को तथा उसकी अनगिनत संवेदनाओं को समाज-सम्मुख रखने का प्रयास किया है। साथ ही सामाजिक-धार्मिक-सांप्रदायिक कुरीतियों, विसंगतियों पर भी कठोर प्रहार किया हैं। प्रस्तुत कविता में सांप्रदायिक दंगों के बाद की आम आदमी की भीषण एवं दीन-हीन स्थिति को उजागर किया गया है। यह कविता उनके 'ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या?' इस काव्य-संग्रह में संकलित है। इस कविता में कलीमुद्दीन मुस्लिम रिक्षावाला होने के कारण मेरठ में ज्यादातर हिंदू यात्रियों से अपनी मजदूरी पाने के लिए अपना नाम बदल कर प्रेम प्रकाश रखता है। सिर्फ यही नहीं वह जोगिया रंग का कुर्ता, माथे पर चंदन का टीका, कान में लाल फूल और गले में रूद्राक्ष की माला भी पहनता है। लेकिन कलीमुद्दीन से प्रेम प्रकाश बनकर भी उसे सांप्रदायिक विरोधों एवं द्वेष का सामना करना पड़ता हैं। कवि कल्लू को पहचानते हैं, उनके संवेदनशील हृदय में उसके प्रति गहरी सहानुभूति उत्पन्न होती है और वे उसकी रिक्षा में बैठकर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हैं। मजदूरी न मिलने के कारण कल्लू और उसका लाचार परिवार भूख की समस्या से ग्रस्त है। कई दिनों की भूखमरी के बाद मजबूर कलीमुद्दीन प्रेम प्रकाश बन कर ही अपनी एवं अपने परिवार की भूख मिटा सकता है। कवि कल्लू एवं उसके परिवार की दर्दनाक दशा के प्रति अपार सहानुभूति जताते हैं।

कवि मन ही मन कल्लू के परिवार में स्थित उसकी बूढ़ी दादी, बीमार अब्बाजान के साथ बैठकर चाय पीने की ख्वाहिश जताते हैं, जहाँ कल्लू के नन्हें-मुन्ने बच्चे मेरी दाढ़ी के बाल सहलाएँगे। तभी उनके अंदर से एक गुस्सैल आवाज आती है कि खूसट बुड्ढे तेरी खोपड़ी के अंदर यह क्या चल रहा है। कवि ने यहाँ तमाम इंसानी संवेदनाओं पर प्रतीकात्मक ढ़ंग से प्रश्नचिह्न लगाया है। आज भी ऐसी स्थिति के दर्शन होते रहते हैं, जिसमें आम आदमी को ही ज्यादातर उसके गंभीर परिणामों को भुगतना पड़ता है। अत: प्रस्तुत कविता के माध्यम से सांप्रदायिक द्वेष से घिरे आम आदमी की व्यथा को चित्रित करते हुए सांप्रदायिक द्वेष का विरोध कर सांप्रदायिक सद्भाव की कामना करते हैं।

आज भी इस प्रकार के सांप्रदायिक दंगों के कारण कविता में वर्णित भयावह स्थिति के दर्शन होते हैं और फिर आम आदमी को ही सबसे ज्यादा इससे उत्पन्न गंभीर परिणामों से गुजरना पड़ता हैं। अत: जन-सामान्य के पक्षधर कवि नागार्जुन जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से पूरी सच्चाई के साथ सांप्रदायिकता की समस्या से ग्रस्त आम आदमी की व्यथा को उजागर कर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हुए सीख दी है, जो आज के परिवेश में भी प्रासंगिक है।

3.3.3 तेरी खोपडी के अंदर कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता के माध्यम से नागार्जुन जी ने हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक झगड़ों के बाद उसका गहरा असर कितनी हद तक हिंदू और मुस्लिम दोनों मजहबों के आम आदमियों पर होता है, इसे बड़ी ही संवेदनशीलता और यथार्थता के साथ बयान किया है। उत्तर प्रदेश में एक गंगातटवर्ति जिला है मेरठ, जहाँ हर साल गंगा नहाकर पुण्य कमाने वालों की संख्या लाखों में होती है। जब मेरठ में सांप्रदायिक दंगा हुआ तो सामान्य मजदूर, सामान्य जनता का ही नुकसान सबसे ज्यादा हुआ। कविता की शुरूआत में ही हिंदू-मुस्लिम दंगे से प्रभावित अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए मजबूर रिक्षावाला प्रेम प्रकाश कवि से मिलता है। प्रेम प्रकाश ने जोगिया रंग का कुर्ता, माथे पर चंदन का टीका, कान में लाल फूल और गले में रूद्राक्ष की माला पहनी है। प्रेम प्रकाश अत्यंत गंभीरता से कवि से पूछता है कि उन्हें कहाँ जाना है। गेहूँए रंग के उस दुबले-पतले, बड़ी-बड़ी आँखों वाले, चंदन का टीका लगाए हुए और पीली लुंगी पहने हुए युवक को देखते ही कवि उसे पहचान लेता है। मजदूरी पाने की समस्या से ग्रस्त उसकी चिंता कवि को स्पष्ट दिखाई देती है। प्रेम प्रकाश अर्थात वह कल्लू अर्थात कलीमुद्दीन ही था।

सांप्रदायिक दंगों के कारण प्रेम प्रकाश अर्थात कलीमुद्दीन जैसे लोगों को निर्दोष होते हुए भी रोजी-रोटी के लिए तरसना पड़ता है। मेरठ में गंगास्नानादि के लिए आनेवाले यात्री ज्यादातर हिंदू होते हैं, इसलिए कलीमुद्दीन से प्रेम प्रकाश बनकर रिक्षा चलाते हुए वह अपने परिवार के लिए चार पैसे जुटाने की कोशिश में है। लेकिन जैसे ही कवि प्रेम प्रकाश की रिक्षा में बैठने लगे बाकी रिक्षवालों ने कवि को उसकी रिक्षा में बैठने से रोकना चाहा, क्योंकि भले ही वह हिंदू दिखता है, मगर वह मुसलमान है। जब सांप्रदायिक शक्तियाँ कवि नागार्जुन जी को प्रेम प्रकाश की रिक्षा में बैठने से रोकते हुए सावधान कराते हैं, तब कवि विद्रोह कर कलीमद्दीन उर्फ प्रेम प्रकाश की रिक्षा में बैठकर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हैं।

समाज में व्याप्त जनसाधारण के प्रति दृढ़ आस्था रखनेवाले बाबा नागार्जुन जी कलीमुद्दीन और उसके परिवार के प्रति गहरी संवेदनशीलता बरतते हैं। प्रेम प्रकाश अपनी रिक्षा से कवि और उनके मित्र को ले जाते वक्त उनकी बातें सुनता है। इसलिए वह मेरठ कॉलेज होस्टेल के गेट पर कवि को पहुँचाने पर कहता है कि अब वह चुटैया भी रखेगा, क्योंकि आठ-दस रोज की भूखमरी के बाद उसके अंदर यह अक्ल फूटी है, रूद्राक्ष के मनके अच्छी मजूरी दिला रहे हैं, अब वह चंदन का टीका भी रोज लगाएगा और उसने अपना नाम भी तो बदल दिया था- प्रेम

प्रकाश। उसे जाते देख कवि सोचते हे कि भूख की भट्टी में कलीमुद्दीन खाक हो गया है, भूख ने ही उसे कलीमुद्दीन से प्रेम प्रकाश बनाया है। प्रेम प्रकाश बनकर ही वह अपनी रोजी-रोटी पा सकेगा और अपने परिवार को कुछ खिला सकेगा।

कवि कल्लू से दिली ख्वाहिश अदा करते हैं कि मुझे उस नाले के करीब ले जा जहाँ कल्लू का परिवार रहता हैं मुझे उसकी बूढ़ी दादी, बीमार अब्बाजान के साथ बैठकर चाय पीनी है, जहाँ कल्लू के नन्हें-मुन्ने बच्चे मेरी दाढ़ी के बाल सहलाएँगे। और... कवि अपनी इसी सोच में मग्न हैं कि उनके अंदर से एक गुस्सैल आवाज आती है कि खूसट बुड्ढे, तेरी खोपड़ी के अंदर यह क्या चल रहा हैं कल्लू तेरा लगता ही कौन है? खबरदार, तुझे मेरठ आने के लिए ही किसने कहा था? जो आवाज कवि को आज भी कभी-कभी सुनाई देती रहेगी। याने यहाँ कवि ने तमाम इंसानी संवेदनाओं पर प्रतीकात्मक ढ़ंग से प्रश्नचिह्न लगाया है। एक इंसान के नाते इस समस्या की ओर अनदेखा कर देना कि कल्लू लगता ही है कौन किसी का? और फिर प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक ढ़ंग से ऐसी स्थितियों में इंसान की

फितरत, मानसिकता एवं संवेदनाओं के प्रति प्रक्षोभ जाहीर करना कवि का लक्ष्य है। आज भी इस प्रकार के सांप्रदायिक दंगों के कारण कविता में वर्णित भयावह स्थिति को दर्शन होते हैं और फिर आम आदमी को ही सबसे ज्यादा इससे उत्पन्न गंभीर परिणामों से गुजरन पड़ता है। अत: जन-सामान्य के पक्षघर कवि नागार्जुन जी ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से पूरी सच्चाई के साथ सांप्रदायिकता की समस्या से ग्रस्त आम आदमी की व्यथा को उजागर कर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते हुए सीख दी है, जो आज के परिवेश में भी प्रासंगिक है।

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न :

1) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' इस कविता के कवि ..... जी हैं।

   1) नागार्जुन 2) निराला 3) चंद्रकांत देवताले 4) धूमिल

2) नागार्जुन का असली नाम ..... है।

   1) वैद्नाथ मिश्र 2) दिनानाथ मिश्र 3) वैद्यनाथ शर्मा 4) वैद्यनाथ वर्मा

3) ..... ने अपना नाम बदल कर प्रेम प्रकाश रखा था।

   1) मुईनुद्दीन 2) निजामुद्दीन 3) कलीमुद्दीन 4) सिराजुद्दीन

4) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता में हिंदू-मुस्लिम दंगे से प्रभावित अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए मजबूर रिक्षावाला प्रेम प्रकाश कवि से ..... में मिलता है।

   1) दिल्ली 2) लखनऊ 3) वाराणसी 4) मेरठ

5) प्रेम प्रकाश ने गले में ..... की माला पहनी हुई है।

   1) मोतियों 2) रूद्राक्ष 3) हिरों 4) फूलों

6) भूख की मजबूरी के कारण ही कलीमुद्दीन अपना नाम बदलकर ..... रखता है।

   1) प्रेम सागर 2) प्रेम प्रकाश 3) जीवन प्रकाश 4) सूर्य प्रकाश

7) कवि कल्लू से दिली ख्वाहिश जताते हैं कि मुझे उस ..... के करीब ले जा जहाँ कल्लू का परिवार रहता है।

   1) सड़क 2) गली 3) मोहल्ले 4) नाले

3.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) नागार्जुन 2) वैद्यनाथ मिश्र 3) कलीमुद्दीन

4) मेरठ 5) रूद्राक्ष 6) प्रेम प्रकाश

7) नाले

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) नागार्जुन जी ने प्रेम प्रकाश का वर्णन किस प्रकार से किया है?

2) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता का प्रेम प्रकाश अपनी रोजी-रोटी के लिए क्या-क्या करता है?

3) प्रेम प्रकाश की भुखमरी का कारण क्या है? / प्रेम प्रकाश किस समस्या से ग्रस्त है?

4) कवि प्रेम प्रकाश से किनसे मिलने की इच्छा व्यक्त करते हैं?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) नागार्जुन जी ने कलीमुद्दीन के माध्यम से आम आदमी की पीड़ा को किस प्रकाश से अभिव्यक्त किया है?

2) नागार्जुन जी ने 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता में सांप्रदायिकता की समस्या को उजागर कर सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत की है, अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

3) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता के कलीमुद्दीन का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

4) 'तेरी खोपड़ी के अंदर' कविता के उद्देश्य-पक्ष पर प्रकाश ड़ालिए।

इकाई 1 (घ)

4. वसंत आ गया

- अज्ञेय

4.3.1 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का परिचय :

अज्ञेय जी हिंदी साहित्य-जगत के श्रेष्ठतम हस्ताक्षरों में से एक हैं। उनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। हिंदी काव्य एवं कथा जगत को एक नया मोड़ देने का प्रयास उन्होंने किया है। अज्ञेय जी हिंदी काव्यधारा के प्रयोगवाद एवं नई कविता आंदोलन के मुख्य कवि हैं। उनका जन्म 7 मार्च, 1911 ई. को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के देवरिया तहसील के कसया गाँव में हुआ। अज्ञेय के पिताजी पुरातत्त्व विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे। पिताजी के कार्यक्षेत्र के बदलते रहने के कारण अज्ञेय की शिक्षा एक स्थान पर संपन्न न हो सकी। उनकी प्राथमिक शिक्षा उनके

पिता जी की देखरेख में हुई। अज्ञेय जी का बाल्य काल लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में व्यतीत हुआ। आपकी विधिवत शिक्षा लाहौर में हुई। सन 1929 को उन्होंने बी. एस्सी. की डिग्री हासिल की और 1929 में ही उन्होंने एम्. ए. अंग्रेजी विषय को लेकर पढ़ाई शुरू की लेकिन क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने के कारण पढ़ाई पूरी न हो सकी। सन 1930 से 1936 तक जेल एवं नजरकैद में बीते। स्वतंत्रता के बाद कुछ समय तक अज्ञेय जी ने भारत सरकार के रेडियो के समाचार विभाग में काम किया। उन्होंने कई सालों तक सैनिक, विशाल भारत, नया प्रतीक आदि पत्रिकाओं के संपादक के रूप में जिम्मेदारी को सँभाला। कॅलिफोर्नियास विश्वविद्यालय से लेकर जोधपुर विश्वविद्यालय तक उन्होंने अध्यापन का कार्य किया। देश-विदेश की यात्राएँ की। दिल्ली वापस लौटने पर दिनमान साप्ताहिक, नवभारत टाईम्स, अंग्रेजी पत्र वाक् और एवरी मैंस जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया।

छायावादोत्तर काल के कवियों में काव्य-शिल्प संबंधी नए प्रयोग करनेवालों में अज्ञेय जी प्रमुख हैं। उनकी कविताओं में उन्होंने पुराने बिम्बों और प्रतीकों को नया अर्थ प्रदान किया है। उनके काव्य में प्रेम, रहस्य, प्रकृति, सौंदर्यानुभूति, आत्मचिंतन, वैयक्तिकता, बौद्धिक चिंतन और प्रयोगशीलता मिलती है। उन्हें 'आँगन के पार द्वार' इस कविता-संग्रह के लिए सन 1964 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया है तथा 'कितनी नावों में कतनी बार' इस काव्य-संग्रह के लिए उन्हें सन 1979 में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। निश्चय ही हिंदी साहित्य जगत में उनका स्थान सर्वतोपरि है। ऐसे महान हस्ति का देहांत दिल्ली में 4 अप्रैल, 1987 ई. को हुआ।

प्रमुख रचनाएँ :

कविता-संग्रह	-	भग्नदूत, चिंता, इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इंद्रधनु रौंदे हुए, अरी ओ करूणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, पहले मैं सन्नाआ बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे आदि।
उपन्यास	-	शेखर : एक जीवनी भाग 1, 2 नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी।
कहानी-संग्रह	-	विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, अमर वल्लरी, ये तेरे प्रतिरूप आदि।
यात्रावृत्त	-	अरे यायावर याद रहेगा? एक बूँद सहसा उछली।
निबंध-संग्रह	-	सब रंग, त्रिशंकु, आत्मनेपद, हिंदी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, आलवाल, लिखि कागज कोरे भवंती, अंतरा अंत: प्रक्रियाएँ, स्त्रोत और सेतु, व्यक्ति और व्यवस्था, युग संधियों पर आदि।
नाटक	-	उत्तर प्रियदर्शी।
संस्मरण	-	स्मृतिरेखा।
संपादन	-	तार सप्तक भाग 1, 2, 3, 4 सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, दिनमान आदि पत्रिकाएँ, पुष्करिणी, रूपांबरा, समकालीन कविता में छंद आदि।

4.3.2 वसंत आ गया कविता का परिचय :

प्रस्तुत कविता अज्ञेय जी के 'बावरा अहेरी' इस काव्य-संकलन में संकलित है। इस कविता के माध्यम से कवि ने प्रकृतिगम सौंदर्य को बिखेरकर सामने रखा हैं। वसंत ऋतु के आगमन पश्चात के सुनहरे माहौल को बखूबी ढ़ंग से चित्रित करते हुए कवि ने प्रकृति जैसे ही नवचेतना को लेकर मनुष्य को कार्यरत रहने का संदेश दिया है। उत्साहमय वसंत ऋतु में मनुष्य को जगने के लिए कवि कहते हैं। मलय का झोंका, पीपल की खाल, सिरिस के फूल, नीम के बौर, कचनार की कलि, पलाश के फूल एवं आकाश के बादल आदि के माध्यम से वसंत ऋतु के प्रकृतिगत सौंदर्य का अनोखा चित्रण किया है। प्रकृति में नवचेतना जागृत हो गई है। सारी दिशाओं में यौवन एवं प्यार के स्वर गूँज रहे हैं। अत: कवि इस ताजगीभरे माहौल में हर किसी को नवयौवन, स्नेह एवं उत्साह से चेतित होते हुए कार्यमग्न रहने के लिए कहते हैं।

4.3.3 वसंत आ गया कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने वसंत ऋतु के आगमन से उत्पन्न उल्हासमय, ताजगीभरे, सुंदर एवं सुहाने माहौल को बेहद खुबसुरती के साथ चित्रित किया है। कवि की आंतरिक प्रवृत्ति एवं प्रकृति के प्रति की उनकी सौंदर्य-दृष्टि को कविता बेहतरीन ढ़ंग से उजागर करती है। पेड़ों का नए पत्तों से सुशोभित होना, फुलों का खिलना, कलियों का मुसकाना, हर तरफ हरियाली और बहार का चित्र ऋतुराज बसंत की अपनी खासियत है। इस सुहाने मौसम में हर कहीं चेतना संचरित होती रहती है। कवि ने इस बसंत का अनोखा चित्रण प्रस्तुत किया है।

कवि बसंत के आगमन की सूचना देते हुए सभी को जगने तथा चेतित होने का आवाहन करते हुए कहते हैं कि जागो, मलय का झोंका खेलता हुआ अपने मधुर स्पर्श से रोम-रोम को रोमांचित करते हुए बुला रहा है, जागो बसंत आ गया है। बसंत के आने पर माहौल किस प्रकार से आल्हादित हो गया है यह बताते हुए वे कहते हैं कि पीपल की सूखी खाल कोमल एवं तरोताजा होने लगी है, सिरिस के फूल खिल उठे हैं और अपने अनोखे सौंदर्य को बिखेर रहे हैं। साथ ही ऐसे माहौल में नीम के बौर में भी मिठास छाई हुई है और इसे देखकर कचनार की कली हँस उठी है। पलाश के फूलों से आरती सजाते हुए यह वनभूमि वधू जैसे सज गई है। सारा आकाश प्रेम और स्नेह भरे बादलों से छा गया है। यहाँ कवि ने प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य को उंडेलते हुए बेहद सुंदरता से उसे साकार किया है।

बसंत के आने से पूरे आभामंडल में नवचेतना जागृत हो गई है। यौवन खिल उठा है। निष्प्रभ शरीर में खून की धार चेतित हो उठी है, कोई दूर की अज्ञात सी आल्हादित पुकार मनमानस पर छा गई है। सभी दिशाएँ गूँज उठी है और असीम के अपार भी स्वर बार-बार गूँज रहा है कि हे सखि, हे बंधु, प्यार में ही यौवन है और यौवन में ही प्यार है। कवि सभी को ऐसे मदभरे माहौल में प्यार और यौवन से छाए हुए समा की ओर भी आकृष्ट करते हैं। मानवीयता पर प्रकृतिगत सौंदर्य को आरोपित करते हुए वे हर किसी को नवयौवन, स्नेह एवं उत्साह से चेतित होने को कहते हैं और ऐसे में ही आज मधुदूत भी निज गीत गाते हुए जगने के लिए कह रहा है, नवचेतना के स्वर फूँक रहा हैं। कवि ने प्रस्तुत कविता के माध्यम से मनुष्य को प्रकृतिगत सौंदर्य की तरह ही चेतित हो ताजगी को संचरित करते हुए कर्मलीन होकर विकास की गति को थामने की ओर भी संकेत किया हैं। अत: प्रस्तुत कविता में कवि बसंत के आनेपर प्रकृति की सुंदरता का चित्रण करते हुए, जागृत होकर नवचेतना को अपनाने की दृष्टि से सचेत करना चाहते हैं।

4.4 स्वयंअध्ययन के प्रश्न :

1) 'वसंत आ गया' इस कविता के कवि ..... जी हैं।

1) नागार्जुन 2) निराला 3) अज्ञेय 4) धूमिल

2) अज्ञेय जी का असली नाम ..... है।

1) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायण 2) हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन

3) वैद्यनाथ मिश्र 4) सुदाम पाण्डे

3) वसंत के आने पर ..... की सूखी खाल तरोताजा होने लगी है।

1) आम 2) नीम 3) पेड़ 4) पीपल

4) वसंत के सुंदर माहौल में ..... के बौर में भी मिठास छाई हुई है।

1) नीम 2) आम 3) पीपल 4) करेली

5) वसंत ऋतु में ..... के फूलों से आरती सजाते हुए यह वनभूमि वधू जैसे सज गई है।

1) गेंदे 2) गुलाब 3) सिरिस 4) पलाश

6) वसंत ऋतु में सारा आकाश प्रेम और स्नेह भरे ..... से छा गया है।

1) बादलों 2) आवाज 3) रंग 4) स्वरों

7) असीम के अपार भी स्वर बार-बार गूँज रहा है कि सखि, हे बंधु, प्यार में ही यौवन है और यौवन में ही ..... है।

1) दुलार 2) संसार 3) आनंद 4) प्यार

4.6 स्वयंअध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) अज्ञेय 2) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायण 3) पीपल

4) नीम 5) पलाश 6) बादलों

7) प्यार

अ) लघुत्तरी प्रश्न -

1) 'वसंत आ गया' कविता में अज्ञेय जी ने प्रकृति सौंदर्य को किस प्रकार से वर्णित किया है?

2) अज्ञेय जी ने 'वसंत आ गया' कविता में मनुष्य को किस प्रकार से चेतित हो उठने को कहा है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1) 'वसंत आ गया' कविता में अज्ञेय जी ने वसंत ऋतु का वर्णन कैसे किया है?

2) 'वसंत आ गया' कविता में अज्ञेय जी ने वसंत के प्राकृतिक सौंदर्य एवं नवचेतना का बेहद सुंदर चित्रण किया है, अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।